- विशाखदत्त ने नाटक – मुद्राराक्षस
लिखी
शूद्रक ने मृच्छकटिक लिखा।
ये सभी संगीत प्रधान नाटक थे।
- वीणा के प्रकार – विपंची, परिवादिनी, किन्नरी
का उल्लेख कुछ नाटकों में मिलता है,
- गणित और ज्योतिष के महान विद्वान – आर्यभट्ट,
वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त इसी काल में हुए।
- याज्ञवल्क्य, नारद, कात्यायन एवं बृहस्पति आदि
की स्मृतियाँ भी इसी युग में रची गई।
- भरत पुत्र दत्तिल ने दत्तिलम की रचना इसी
काल में की। (संगीत की गौरवशाली रचना है)
- गुप्तकाल भारतीय संगीत का स्वर्ण युग था।
- बाणभट्ट ने शिवलिंग की उपपुष्पिका पूजा
के प्रसंग में ध्रुवा गीतियों के गान का उल्लेख है
- नाट्य के लिये 'तौर्यत्रिक' संज्ञा थी
- संगीत प्रबन्धों के लिये 'वस्तु' संज्ञा थी।
- रासक नामक गीतों को नृत्य तथा अभिनय के
साथ गाने की प्रणाली थी.
- इसी समय में पंचतंत्र में सप्तस्वर, 21 मूर्च्छनाएँ तथा
36 रागों का उल्लेख भरतोक्त रूप में मिलता है
- यही परम्परा परवर्ती काल में भी इसका प्रमाण
इसवी 7 की कुडिमियामलाई शिलालेख में प्राप्त होता
है,